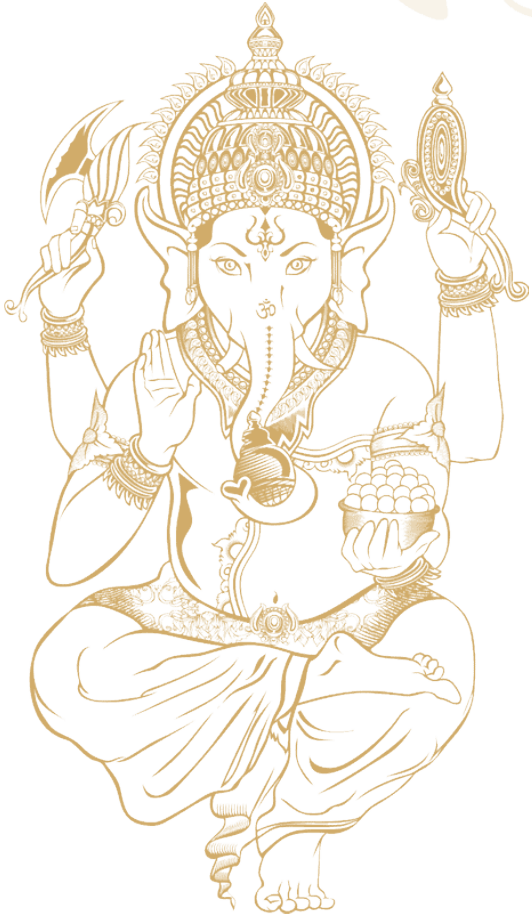

Baby boy

05 Apr 2026

11:15 PM

Sojat Road

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121837701**

तिथि 05/04/2026 **समय** 23:15:00 **वार** रविवार **स्थान** Sojat Road **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:32
अक्षांश 25:48:00 उत्तर **रेखांश** 73:49:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:34:44 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	11:36:26 घं	गण	राक्षस
वेलान्तर	00:02:44 घं	योनि	व्याघ्र
सूर्योदय	06:22:20 घं	नाड़ी	अन्त्य
सूर्यास्त	18:53:03 घं	वर्ण	विप्र
चैत्रादि संवत	2083	वश्य	कीटक
शक संवत	1948	वर्ग	सर्प
मास	वैशाख	युँजा	मध्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	जल
तिथि	4	जन्म नामाक्षर	तो-तोरल
नक्षत्र	विशाखा	पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-ताम्र
योग	सिद्धि	होरा	बुध
करण	बव	चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी		योगिनी	
गुरु 0वर्ष 6मा 9दि		धान्या 0वर्ष 1मा 5दि	
गुरु		धान्या	
	05/04/2026		05/04/2026
	15/10/2026		12/05/2026
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	05/04/2026		05/04/2026
राहु	15/10/2026	पिंगला	12/05/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			19:42:34	वृश्चि	ज्येष्ठा	1	बुध	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			21:43:18	मीन	रेवती	2	बुध	सूर्य	मित्र राशि	1.27	भ्रातृ	पितृ	विपत
चंद्र			02:53:40	वृश्चि	विशाखा	4	गुरु	राहु	नीच राशि	1.33	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल		अ	02:35:45	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	मित्र राशि	1.16	कलत्र	भ्रातृ	जन्म
बुध			24:02:18	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	सम राशि	1.21	आत्मा	ज्ञाति	जन्म
गुरु			21:53:46	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.17	अमात्य	धन	जन्म
शुक्र			13:14:40	मेष	अश्विनी	4	केतु	बुध	सम राशि	1.39	मातृ	कलत्र	क्षेम
शनि		अ	11:54:37	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	चंद्र	सम राशि	1.00	पुत्र	आयु	सम्पत
राहु	व		14:06:45	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु	व		14:06:45	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

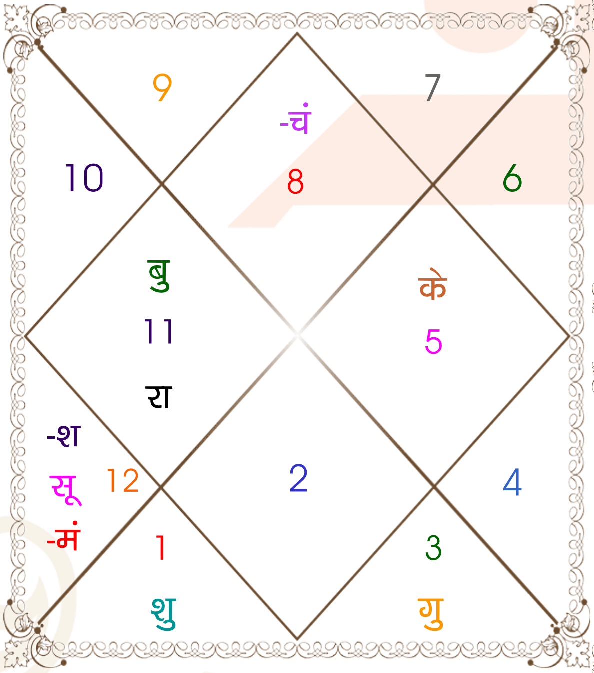

चन्द्र कुंडली

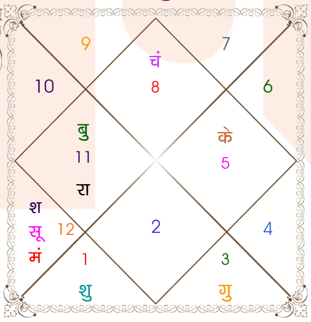

नवमांश कुंडली

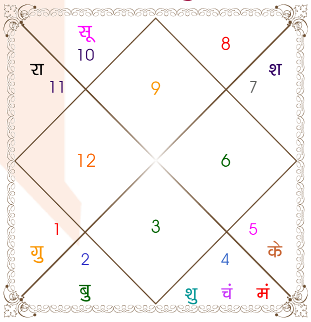

सर्वाष्टकवर्ग

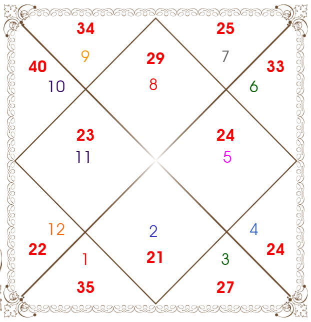

दशमांश कुंडली

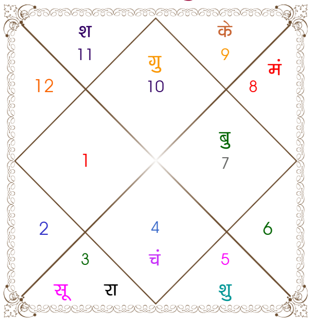

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण ब्राहमण, गण राक्षस, नाड़ी अन्त्य, योनि व्याघ्र तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के अनुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "तो" अक्षर से होगा। यथा- तोता राम

आप हमेशा अपनी पत्नी के वश में रहेंगे तथा अधिकांश सांसारिक कार्यों को उसी की आज्ञा तथा निर्देशों से सम्पन्न करेंगे। आप स्वतंत्रता पूर्वक किसी भी सांसारिक कार्य को सम्पन्न करने के लिए निर्णय लेने में सदा असमर्थ रहेंगे। बिना पत्नी की सलाह लिए कुछ भी नहीं करेंगे। आपकी प्रवृति अभिमानी भी होगी तथा समाज में अपनी इस प्रवृति का कभी कभी प्रदर्शन करते रहेंगे। आपके शत्रु हमेशा आपसे पराजित रहेंगे तथा आपका सामना करने की उनमें हिम्मत नहीं रहेगी। इसके अतिरिक्त आप में क्रोधाधिकता भी रहेगी तथा समय समय में इसका प्रदर्शन भी करते रहेंगे।

गर्वी दारवशो जितारिरधिक क्रोधी विशाखोद्भवः।
जातक परिजातः

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक घमंड, हमेशा अपनी पत्नी के वश में रहने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला तथा अत्यधिक क्रोधी स्वभाव का होता है।

आपके घ्दय में अन्य लोगों के प्रति कभी कभी बिना किसी कारण के ईर्ष्या की भावना रहेगी। किसी व्यक्ति कि अचानक उपलब्धि तथा सफलता प्राप्त करने पर आप उसके प्रति अधिक ईर्ष्यालु हो जाएंगे। साथ ही आप लोलुप भी होंगे तथा अनावश्यक लोलुपता के कारण समाज में अपना मान सम्मान एवं आदर की न्यूनता करेंगे। लेकिन आपका शरीर कान्तिमय रहेगा। अपने विचारों को स्पष्ट करने में आप अति चतुर होंगे तथा इसी वाक्पटुता के कारण आप जीवन में अधिकांश रूप से सफलताएं अर्जित कर सकेंगे। साथ ही अन्य लोगों से समय समय पर आपका विवाद होता रहेगा।

ईर्ष्युर्लुब्धोः द्युतिमान्वचनपटुः कलहकृद्विशाखासु।।
बृहज्जातकम्

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक ईर्ष्या तथा द्वेष करने वाला, लोभी, कान्तियुक्त, वाक्चतुर तथा कलहप्रिय होता है।

आपके मन में धार्मिकता की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा देवताओं के प्रसन्न करने के लिए नित्य हवनादि धार्मिक क्रियाओं को सम्पन्न करते रहेंगे। साथ ही आपकी मित्रता का क्षेत्र भी सीमित रहेगी। अतः आपके वास्तविक मित्रों की संख्या अल्प रहेगी।

सदानुरक्तोग्निसुरक्रियायां धातुक्रियायामपि चोग्रसोम्यः।

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

यस्य प्रसूतौ च भवेद्विशाखा सखा न कस्यापि भवेन्मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवादि पूजन के निमित हवनादि कार्यों में रत रहने वाला, धातुक्रिया में कभी उग्र तो कभी सौम्यता का प्रदर्शन करने वाला तथा किसी का भी मित्र नहीं होता है।

आपका हृदय में दया एवं करूणा के भाव की अल्पता रहेगी। साथ ही दीन दुःखियों के प्रति भी आपके मन में सहानुभूति या करूणा का भाव न्यून ही रहेगा। इसके अतिरिक्त समाज में अन्य जनों से भी आपके मित्रता पूर्ण संबंध रहेंगे।

अतिलुब्धोऽतिमानी च निष्ठुरः कलहप्रियः।
विशाखायां नरो जातः वैश्याजन रतो भवेत।।
मानसागरी

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अति लोभी, घमंडी, निष्ठुर, झगड़ा करने वाला तथा अन्य स्त्रियों से संबंध रखने वाला होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता हैं। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनो से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती हैं। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती हैं। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक स्वरूप देखने में सुन्दर तथा आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दयाभाव रहेगा। जीवन में समस्त प्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के ऐश्वर्य तथा वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक बल से आप पूर्ण रूपेण सुसम्पन्न रहेंगे। आप निर्भयता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा किसी भी प्रकार का भय आपके हृदय में नहीं रहेगा। आप में चतुराई तथा बुद्धिमता का भाव भी रहेगा एवं आपके अधिकांश सांसारिक कार्य इसी तरह से सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त आप विविध प्रकार के सद्गुणों से भी सुशोभित रहेंगे।

वृश्चिक राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका वक्ष स्थल विशाल होगा तथा आखें भी बड़ी बड़ी होगी। आपके शरीर का सामान्य वर्ण तनिक श्यामलता से युक्त होगा तथा हाथ एवं पैर में मत्स्य का निशान भी हो सकता हैं। आपके हाथ की रेखाएं भी बज्र तथा पक्षी के आकार की होंगी। माता पिता तथा गुरूजनों से आपके संबंध अल्प ही होंगे। बाल्यावस्था में आप काफी मात्रा में बीमार भी रहेंगे। अपने ज्ञान तथा बुद्धि के बल पर आप राज्य से किसी

उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी सुशोभित कर सकेंगे। साथ ही आपके कार्य भी काफी कठोर रहेंगे। अतः पुलिस, सेना या सर्जरी आदि विभागों में कार्य कर सकते हैं। आप क्रूरकर्मों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्पन्न करने वाले व्यक्ति भी होंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरुजानुः।
जनकगुरुवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः क्रूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका उदर तथा मस्तक विस्तृत रहेगा तथा प्रवृति में लोलुपता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा तथा अन्य लोगों की वस्तुओं को देखकर आप में इस भावना का प्रार्दुभाव होगा। धर्म तथा ईश्वर की सत्ता में समयानुसार आप श्रद्धा प्रदर्शित करते रहेंगे। आपकी दाढी तथा नाखूनों में चोट का निशान भी रहेगा। आपकी आखें अत्यन्त ही सुन्दर होंगी। आप धनधान्य तथा ऐश्वर्य एवं वैभव से सारे जीवन में सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप कोई न कोई कार्य हमेशा करते रहेंगे क्योंकि निष्क्रिय होकर चुपचाप नहीं बैठने वाले होंगे। साथ ही कार्यो को करने में भी आप हमेशा दक्षता का प्रदर्शन करेंगे। बन्धुवर्ग से आपके सामान्य संबंध रहेंगे। कभी कभी आप में प्रचण्डता का भाव भी उत्पन्न होगा जो क्रोधाधिक्य के कारण होगा। आप अत्यन्त ही प्रतापी एवं पराक्रमी पुरुष होंगे तथा सभी सामाजिक लोग आपकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे तथा पूर्ण मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ सरकार से किसी कानूनी मुकदमे में आप को जीवन में आर्थिक हानि भी हो सकती हैं।

लुब्धो वृतोरुजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः क्रूरचेष्टः।
चौरो बालो रुगार्तो हतचिबुकनखश्चारुनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप एक धनाढ्य पुरुष होंगे तथा बहुत से पारिवारिक या अन्य जनों का आपके द्वारा पालन किया जाएगा। स्त्रियों के विषय में आप एक सौभाग्यशाली पुरुष होंगे तथा उनसे पूर्ण सम्मान, सहयोग तथा लाभार्जन करेंगे। आप में मनुष्यता के सम्पूर्ण गुण विद्यमान रहेंगे। आप राज-सेवा में भी तत्पर रहेंगे। आपके मन में दूसरे के धन को प्राप्त करने की हमेशा प्रबल इच्छा रहेंगी। साथ ही किसी न किसी उद्यम को करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे। आप दृढ़मति के व्यक्ति होंगे तथा जिस के विषय में एक बार आप सोच लेंगे उसे पूर्ण करके ही रहेंगे। इसके साथ ही आप एक साहसी तथा शूरवीर पुरुष भी होंगे तथा साहस पूर्वक अपने समस्त कार्यकलापों कों सम्पन्न करेंगे।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पितुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थ नित्यमुद्योगयुक्तो।

दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

आपकी प्रवृति जुआ आदि खेलने की भी रहेगी फलतः इसके द्वारा भी आपको कई बार आर्थिक हानि उठानी पड़ेगी। आप का स्वभाव अन्य लोगों से यदा कदा विवाद वाला भी रहेगा। साथ ही शान्ति का आभास भी आपको कभी कभी ही होगा।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

आप बाल्यावस्था से ही भ्रमण प्रिय होंगे तथा इधर उधर भ्रमण तथा यात्रा करने की आपके मन में प्रबल इच्छा विद्यमान रहेगी। आप स्वभाव से ही अभिमानी प्रवृति के होंगे तथा छोटी छोटी बातों तथा वस्तुओं पर समय समय पर इसका अन्य लोगों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। स्वजनों के प्रति भी आपके ह्दय में कठोरता का भाव रहेगा तथा उनके प्रति आपके मन में सहानुभूति की भावना अल्प मात्रा में ही रहेगी। आप अपने साहस पूर्ण कार्यो के द्वारा धनार्जन करने में पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप कभी कभी अधिक बोलने वाले व्यक्ति होंगे। आप का ह्दय कठोरता से युक्त रहेगा तथा दया एवं करूणा की इसमें न्यूनता रहेगी। आप छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही क्रोधित होने वाले होंगे। आप एक साहसी पुरूष होंगे तथा समस्त कार्यों को साहसपूर्वक सम्पन्न करेंगे। साथ ही साहसिक कार्यों को करने के लिए आप तत्पर रहेंगे।

आप जीवन में कभी कभी उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित रह सकते हैं। साथ ही आपकी आकृति भी सामान्यतया सुन्दर ही होगी। कभी कभी आप अत्यन्त कटु एवं कठोर वाणी को भी बोलने वाले होंगे जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न नहीं रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक आपको अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में जन्म होने के कारण आपकी प्रवृति स्वछन्द रहेगी तथा स्वछन्दता पूर्वक ही कार्य करने में आप तत्पर रहेंगे बाहरी हस्तक्षेप या दवाब आपको पसन्द नहीं रहेगा। आप धनार्जन करने तथा उसे संग्रह करने में भी तत्पर रहेंगे। अच्छी बातों को भी आप शीघ्रतापूर्वक ग्रहण करेंगे तथा कार्य क्षेत्र में पूर्व प्रशिक्षित होने के कारण सभी लोग आपकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे एवं आपको यथोचित मान सम्मान भी प्रदान करेंगे। आपकी एक विशेष कमजोरी यह रहेगी कि आप स्वयं अपने मुख से अपनी ही प्रशंसा स्वयं करेंगे। जिससे आपके सामाजिक प्रभाव में न्यूनता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होगी। आप सर्वप्रकार के वैभव तथा ऐश्वर्य से भी सुसम्पन्न रहेंगे।

स्वच्छन्दोऽर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रूचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेक्षा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा षष्ठी तथा एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपात योग, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा सर्वथा अनिष्ट फलदायक रहेगा। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यातिपात योग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, कयविकयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी साथ ही शुक्रवार प्रथम प्रहर एवं वृष राशि में स्थित चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधाएं तथा अन्य शुभ कार्य सफल नही हो रहे हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव भगवान शिव की पूजा करनी चाहिए एवं नित्य प्रातः विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए। साथ ही सोना, मूंगा, रक्त वस्त्र, रक्त चन्दन, गेहूं, मनका इत्यादि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक किसी योग्य पात्र को दान करना चाहिए इससे आपकी मानसिक चिन्ताएं दूर होगी तथा अशुभ प्रभाव भी कम होंगे। इसके लिए आप सोमवार का उपवास भी कर सकते हैं। साथ मंगल के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिये।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ श्रीं भौमाय नमः।

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com